''तुलसी काव्य का दर्शनिक आधार''

डॉ0 बन्दना निगम

गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्य का दार्शनिक आधार भक्ति है संसार असत्य है प्रभुभक्ति ही सत्य है संसार के प्रति आसक्त होना मोह है, प्रभु की ओर उन्मुख होना प्रेम या भक्ति है कविता की दार्शनिकता का प्रतिपादन करते हुये गोस्वमी जी ने ईश्वर, जगत, संसार, और जीवके स्वरूप एवं उनके पारस्परिक संबंधो की विवेचना किये है। तुलसी का मत है कि कविता में अनेक अर्थ व्यंजित होना चाहिए तुलसी की रचना सकल जन रंजिनी मोह भ्रमहारिणी कलि कलुष विभांजिनी इसलिए है कि वह अर्थ गर्भा है इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि तुलसी की दृष्टि में वही कविता सार्थक है जिससे अधिक से अधिक लोगों का अल्हाद हो सके वह अधिकाधिक लोगों का कल्याण कर सके–

''कीरति कलित भूति भलि सोई ।
सुरसरि सम सब कर हित होई।।''(1)

तुलसीदास जी भक्त एवं संत कवि थे। उनके विचार उदार और सुलझे हुए थे। उनके हद्य विशाल और दृष्टि व्यापक थी। वे शुद्ध हद्य से साधु ऋषि, तत्व द्रष्टा समाज–सुधारक और मानव समाज से ही नही वरन, सम्पूर्ण जीव धारियों से स्नेह करने वाले व्यक्ति थे तुलसीदास जी के दार्शनिक विचार समन्वयवादी है। भक्ति से परमात्मा के गुण जीवात्मा मे प्रवेश करते है जिससे परलौकिक जीवन तो आन्ददपूर्ण हो ही जाता है, भौतिक जीवन भी रस सिक्त होकर सरस होता है। राम की भक्ति जीव और जगत के नाना रूपों और संबंधो को समरूप स्पष्ट करती है। उन्होंने अपरा प्रकृति और परा–प्रकृति दोनों की ओर चित्त लगाया है। तथा भक्ति और निष्ठा के माध्यम से सम्पूर्ण भावराशि को ग्रहण कर सगुण राम के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के कल्याण और ज्ञानोदय का मार्ग खोल दिया है।

''बारि मथे घृत होई बरू सिकता ते बरू तेल।
बिनु हरिभजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल।।'' (2)

गोस्वामी जी के समय में चार दार्शनिक सिद्धांत प्रचलित थे अद्वैवतवाद, विशिष्टा द्वैतवाद, शुद्धद्वैतवाद, गोस्वामी जी अपनी श्रृति सम्मत एवं संजुम विरति विवेक हरि भक्ति के निरूपण में इन चारो सिद्धांतो का प्रभाव परिलक्षित होता है। फलतः इनका दार्शनिक मत विद्धानों के मतभेद का विषय बन गया है। प्रत्येक मतावलम्बी इनके कथनों में अपने मतो का समर्थन पाकर इन्हें अपनी और खीचता है। गोस्वामी जी ने कई स्थानों पर जगत को माया और मिथ्या बताया है। उनका कहना है कि जीवन जब तक इस मायामय संसार से विरत नही होता है, तब तक उसे प्रभु की कृपा प्राप्त नही होती है। डॉ. बलदेव मिश्र ने इसी मत का समर्थन करते हुये लिखा है–

''गोस्वामी जी कुछ खण्डन–मण्डन वाले आचार्य तो थे नहीं इसलिये उन्होंने पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टि कोणों का यथास्थान उपयोग किया है और दोनों को पूरी महत्ता दी है। परंतु उनके समूचे सिद्धांत वाक्यों का भली भांती स्वाध्याय करने से यह स्पष्ट हो जाता है। कि उनका यथार्थ दार्शनिक सिद्धांत अद्वैत है।''(3)

तुलसीदास जी ने इन तीन विषयों में क्या कहा है। अपनी दार्शनिक भावना प्रत्यक्ष और दृश्य जगत के आधार पर निर्मित की है। दार्शनिक अध्ययन के तीन प्रमुख क्षेत्र है ब्रम्ह, जीव माया और प्रकृति इन पर विचार कर लेना उपयुक्त होगा।

तुलसी के ब्रम्ह राम –

आराधना के लिए इष्टदेव को चुन लेना आवश्यक है किन्तु इस इष्टदेव को ईश्वर का ही प्रतिरूप मानना चाहिए अन्यथा आराधक का परम् अनुराग भक्ति नही कहलाएगा। परम् अनुराग जब ईश्वर की ओर हो तभी वह भक्ति कहलाती है। राम एक ऐसा सूर्य है। जिनके सामने यह राम हमारे दैनन्दिन जीवन के अनुभवों के भीतर से उजागर हुआ है वह मनुष्य के रूप में अवतरित हुआ है। लेकिन यह राम सब प्रकार से मनुष्य होकर परम् पिता परमात्मा है–

राम ब्रम्ह परमारथ रूपा, अविगत अकथ अनादि अनूपा
सकल विकार रहिगत मेदा, कहि नितनहि निरूपहि वेदा

ऐसे परमपिता परमात्मा जो बिना पैर के चलते है, बिना कान के सुनते है। यानी निर्गुन निराकार रूप है–

''बिनु पद चलई सुनई बिनु काना कर बिनु करम करई विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्त बड़ जोगी।।'' (4)

जो सर्वशक्तिमान ब्रम्ह है वही अधर्म का बचाने के लिए और भक्तों के प्रेमवश उन्हें दर्शन देने के लिए सगुण रूप धारण करता है। अतः ब्रम्ह निर्गुण भी है। सगुण भी –

'' भक्तों के प्रेमवश उन्हें दर्शन देने के लिए सगुण रूप धारण करता है अतः ब्रम्ह निर्गुण भी है सगुण भी–

'' जब जब होहि धरम कै हानी, बाढ़हि असुर अद्यम अभिमानी।।
तब तब प्रभु धरि मनुज सरीरा, होहिं है या निधि सज्जन पीरा।।''(5)
'' ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखरासी।।
सो माया बस परयों गोसाई। बाँध्यों कीट मरकट की नाई।। (6)

माया :–

माया का वर्णन तुलसीदास ने दो रूपों में किया है। प्रथम विधा माया द्वितीय अविधा माया विधा माया से सृष्टि का विकास होता है अविधा से दुख–उन्माद या भ्रम के रूप में व्याप्त होती है। सती, नारद, भुशुण्डि गरूड आदि पर विद्या माया का प्रभाव था। अविधा माया का प्रभाव रावण आदि पर था जो उन्हें ज्ञानहीन बनाये था वरन् दुराचार की ओर भी प्रेरित किये था। माया के संबंध में राम लक्ष्मण से कहते है।

'' मै अरू मोर तोर तै माया, जेहि बस कीन्हें जीव निकाया।
गोगोचर जहं लगिमन जाई, सो सब माया जानेहु भाई।।
तेहिकर भेद सुनहू तुम सोऊ, विद्या ऊपर अविधा दोऊ।।
एक दृष्ट अतिशय दुख रूपा, जा सब जीव पराभव कूपा।।'' (7)

जगत :–

परमात्मा की इच्छा का परिणाम सृष्टि हेतु ब्रम्ह राम ने अपनी माया के द्वारा चराचर जगत का सर्जन किया है। सम्पूर्ण जड़ चेतन राममय है अतः मनुष्य को विवेक के द्वारा दोषों का परित्याग करके गुणों को ग्रहण करना चाहिए कोई जगत को सत्य मानता है कोई असत्य तो कोई दोनो माना है। परिणामवादी सांख्याचार्य की दृष्टि से जगत मिथ्या नहीं है किंतु तुलसीदास जी इस प्रपंच में नहीं पड़ते वे सिद्धांत को भ्रमात्मक बताकर स्पष्ट करते है–

'' कोउ कह सत्य झूट कह कोउ, जुगल प्रबल करि मानै।
तुलसीदास परिहरै तीनि सो आपन पहिचानै।।'' (8)

वास्तव में सर्वजन कल्याण कारी भक्ति पथ है। वह एक राजमार्ग है जिस पर चलने पर सभी को सफलता प्राप्त हो सकती है। भक्ति यद्यपि शांत, सख्य, दास्य, वात्सल्य और माधुर्य, ये पांच भाव कहे गये है। तुलसीदास जी यथार्थ में दास्य भाव को ही उपयुक्त मानते है। अन्यथा ईश्वर और जीव क बीच का यथार्थ संबंध विकसित नही हो पाता और विरह विकलता का कष्ट अधिक होता है। दास्य भक्ति के अंतर्गत पूर्ण आत्म समर्पण अनन्यता, दैन्य अनवरत लगन आवश्यकहै काक भुशुण्डि ने गरूड़ से कहा है–

'' सेवक सेव्य भाव बिनु भवन तरिय उरगारि''

अनेक बातों के आधार पर हम कह सकते है कि तुलसीदास जी के दार्शनिक विचार न साम्प्रदायिक है न संकीर्ण। वे व्यापक और उदार है। जो बाते अनेक सम्प्रदायों में सभी को मान्य है तुलसी ने उन्ही को ग्रहण किया है। उनकी धर्म संबंधी धारणा सर्वजन सुलभ और लोक कल्याणीकारी है।

तुलसीदास जी का दार्शनिक सिद्धांत किस मतवाद के अंतर्गत है यह विवाद का विषय है। विद्धानों ने अपनी मान्यता और विचार धारा के अनुसार उन्हें किसी न किसी विशेष दार्शनिक पद्धति का समर्थक ठहराने का प्रयत्न किया है। तुलसीदास जी के दार्शनिक सिद्धांतो को न अद्वैतवाद कह सकते नहीं द्वैतवाद द्वैत और अद्वैतवाद की बीच की कड़ी विशिष्टाद्वैत ही मान सकते है। ज्ञान और भक्ति ध्यान और कर्म सबकी पुष्टि अनायास नही, जानबूझकर काव्यमाला में पिरोई गई है। यही कारण है कि गियर्सन जैसे विद्वान ने अपना अभिमत प्रकट करते हुए लिखा है–

''गोस्वामी जी का झुकाव अद्वैतवाद की ओर अत्यधिक है परन्तु वे विशिष्टाद्वैवादी ही है और गोस्वामी जी ने इस मत का आभास दिया है

''सियाराम मय सब जग जानी ।
करौ प्रणाम जोरी जुग पानी।।''

गोस्वामी जी की दार्शनिक आधार स्वतन्त्र है उनका दर्शन भक्ति दर्शन है।

संदर्भ सूची

(1) रामचरित मानस : तुलसीदास 1/14/9
(2) रामचरित मानस : तुलसीदास 7/22/20, 21

(3)	तुलसी दर्शन	:		210 पेज
(3)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	1 / 117 / 5,6
(4)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	7 / 73 / ख
(5)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	7 / 117 / 2,3
(6)	रामचरित मानस	:	तुलसीदास	3 / 15 / 2, 6
(7)	विनय पत्रिका	:	तुलसीदास	111 पेज